कन्नड प्रशस्ति

• • • • •

अन्तर-प्ररूपणाके पश्चात् और भाव-प्ररूपणासे पूर्व प्रतियोंमें दो कन्नड पद्योंकी प्रशस्ति पाई जाती ही जो इस प्रकार है-

पोडवियोळु मल्लिदेवन
पडेदर्थवदर्थिजनकवाश्रितजनकं ॥
पडेदोडमेयादुदिन्नी
पडेवळनौदार्यलवने बण्णिपुदो ॥

कडु चोद्यवन्नदानं
बेडंगुवडेदेसेव जिनगृहगळुवं ता-।
नडेवरियदे माडिसुवं
पडेवळनी मल्लिदेवनेंब विधात्रं ॥

ये दोनों कन्नड भाषाके कंदवृत्तमें हैं। इनका अनुवाद इस प्रकार है -

''इस संसार में मल्लिदेव द्वारा उपार्जित धन अर्थी और आश्रित जनोंकी संम्पत्ति हो गया। अब सेनापतिकी उदारतका यथार्थ वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है ?''

''उनका अन्नदान बडा आश्चर्यजनक है। ये सेनापति मल्लिदेव नामके विधाता विना किसी स्थानके भेदभावके सुन्दर और महान् जिनगृह निर्माण करा रहे हैं॥''

इन पद्योंमें मल्लिदेव नामके एक सेनापतिके दान-धर्मकी प्रशंसा की गई है। उनके विषयमें यहां केवल इतना ही कहा गया है कि वे बडे दानशील और अनेक जैन मन्दिरोंके निर्माता थे। तेरहवीं शताब्दिके प्रारंभमें मल्लिदेव नामके एक सिन्द-नरेश हुए हैं। उनके एचणण नामके मंत्री थे जो जैनधर्म पालते थे और उन्होंने अनेक जैन मन्दिरोंका निर्माण भी कराया था। उनकी पत्नीका नाम सोविलदेवी था। (ए.क.-७, लेख नं. ३१७,३२० और ३२१:).

कर्नाटक के लेखोंमें तेरहवीं शताब्दिके एक मल्लिदेवका भी उल्लेख मिलता है जो होय्सलनरेश

नरसिंह तृतीयके सेनापति थे। किन्तु इनके विषयमें यह निश्चित नहीं है कि वे जैनधर्मावलम्बी थे या नहीं। श्रवणबेल्गोलके शिलालेख नं. १३० (३३५) में भी एक मल्लिदेवका उल्लेख आया है जो होय्सलनरेश वीरबल्लालके पट्टणस्वामी व सचिव नागदेव और उनकी चन्दव्वे (मल्लिसेट्टिकी पुत्री) के पुत्र थे। नागदेव जैनधर्मावलम्बी थे इसमें संदेह नहीं, क्योंकि, उक्त लेखमें वे नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्ती के पदभक्त शिष्य कहे गये हैं और उन्होंने नगरजिनालय तथा कमठपार्श्वदेव बस्तिके सन्मुख शिल्लाकुट्टम और रंगशाला निर्माण कराई थी तथा नगर जिनालयको कुछ भूमिका दान भी किया था। मल्लिदेवकी प्रशंसामें इस लेखमें जो एक पद्य आया है वह इस प्रकार है-

परमानन्ददिनेन्तु नाकपतिगं पौलोमिगं पुट्टिदों
वरसौन्दर्य्यजयन्तनन्ते तुहिन-क्षीरोद-कल्लोल भा-
सुरकीर्त्तिप्रियनागदेवविभुगं चन्दब्बेगं पुट्टिदों
स्थिरनीपट्टणसामिविश्वविनुतं श्रीमल्लिदेवाह्वयं ॥१०॥

अर्थात् ''जिस प्रकार इन्द्र और पौलोमी (इन्द्राणी) के परमानन्द पूर्वक सुन्दर जयन्तकी उत्पत्ति हुई थी, उसी प्रकार तुहिन (बर्फ) तथा क्षीरोदधिकी कल्लोलोंके समान भास्वर कीर्तिके प्रेमी नागदेव विभु और चन्दव्वेस इन स्थिरबुद्धि विश्वविनुत पट्टणस्वामी मल्लिदेवकी उत्पत्ति हुई।'' इससे आगेके पद्यमें कहा गया है कि वे नागदेव क्षितितलपर शोभायमान हैं जिनके बम्मदेव और जोगव्वे माता-पिता तथा पट्टणस्वामी मल्लिदेव पुत्र हैं। यह लेख शक सं. १११८ (ईस्वी ११९६) का है, अतः यही काल पट्टणस्वामी मल्लिदेवका पडता है। अभी निश्वतः तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु संभव है कि यही मल्लिदेव हों जिनकी प्रशंसा धवला प्रतिके उपर्युक्त दो पद्योंमें की गई है।